'मनीषिका' शोध–संस्कृति–संस्कार सेवा संस्थान द्वारा डॉ॰ अरूण प्रकाश अवस्थी स्मृति साहित्य सम्मान कार्यक्रम में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–24.12.2016, समय–अप॰ 4:30 बजे, स्थान–कोलकाता)

'मनीषिका' शोध–संस्कृति–संस्कार सेवा संस्थान के तत्त्वावधान में आयोजित 'डॉ॰ अरूण प्रकाश अवस्थी स्मृति साहित्य सम्मान कार्यक्रम' में प्रमुख रूप से उपस्थित डॉ॰ कृष्णबिहारी मिश्र जी, डॉ॰ प्रेम प्रकाश त्रिपाठी जी, श्री रामेश्वर मिश्र 'अनुरोध' जी, श्री सरदारमल जी कॉकरिया, श्री पुस्कर लाल केडिया जी, श्री राधेश्याम सोनी जी, श्रीमती दुर्गा व्यास जी, कार्यक्रम में उपस्थित सभी साहित्यकार–कलाकारगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों, सज्जनों!!

आपकी संस्था 'मनीषिका' की गतिविधियों के बारे में जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। मुझे बताया गया है कि यह संस्था युवा पीढ़ी एवं बच्चों को संस्कारिक करने, सामाजिक चेतना जागृत करने, साहित्य एवं साहित्यकार को सम्मानित करने के बड़े संकल्पों के साथ स्वास्थ्य–सेवा हेतु भी समर्पित है। ये उद्देश्य संस्था के प्रति आदर भाव जागृत करते हैं। मुझे बताया गया है कि पुस्कर लाल केडिया के नेतृत्व में 'मनीषिका' ने प्रकाशन एवं साहित्यिक–सामाजिक सक्रियता से कोलकाता महानगर में अपना विशिष्ठ स्थान बनाया है। मैं इस संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कोलकाता के मूर्धन्य साहित्यकारों– स्व॰ शम्भूप्रसाद श्रीवास्तव तथा डॉ॰ अरूण कुमार अवस्थी के नाम से 'मनीषिका' प्रतिवर्ष साहित्य सम्मान प्रदान करेगी। दोनों ही साहित्यकारों का अपने–अपने क्षेत्र में बड़ा सम्मान रहा है। इनकी साहित्यिक गतिविधियों से प्रेरित–प्रभावित होनेवाले रचनाकारों की एक

श्रृंखला आज भी सक्रिय एवं गतिशील है, यह उन विभतियों के वैशिष्ट्य का परिचायक है। पहला 'डॉ॰ अरूण प्रकाश अवस्थी' स्मृति साहित्य सम्मान इस शहर के वरिष्ठ कवि श्री रामेश्वर मिश्र 'अनुरोध' को दिया जा रहा है। 'अनुरोध' जी के काव्य–वैविध्य तथा श्रोताओं में उनकी कविता के प्रभाव की चर्चा यहाँ की गई। आप सब इनके काव्यात्मक अवदान से सुपरिचित हैं। मैं इस सम्मान हेतु अपनी शुभेच्छा व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है कि मिश्रजी की रचनाओं के माध्यम से समाज में सुसंस्कार विकसित होंगे तथा भारत–भूमि के प्रति हमारा अनुराग और मजबूत होगा।

मित्रों, किसी ने ठीक की कहा है कि–

''अंधकार है वहाँ जहाँ, आदित्य नहीं है,

मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नही है।''

–साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। मतलब यह कि समाज की विशेषताएँ और विसंगतियाँ– दोनों साहित्य के दर्पण में प्रतिबिम्बित होती हैं। दर्पण का काम व्यक्ति या समाज को उसकी सच्ची तस्वीर दिखाना होता है, ताकि हम अपने चेहरे या चरित्र में सुधार ला सकें, सौन्दर्य भर सकें। एक सच्चा साहित्यकार समाज की छवि को जब अपने साहित्य में चित्रित करता है, तो उसका उद्देश्य सकारात्मक ही होता है। वह चाहता है कि व्यक्ति या समाज उस छवि को देखकर अपनी छवि में और अधिक निखार लाये, बेहतरी लाये। हिन्दी और उर्दू में कथा–सम्राट के रूप में विख्यात मुंशी प्रेमचन्द ने 1936 ई॰ में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की अध्यक्षता करते हुए कहा था कि–

''हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो –जो हममें गति और बेचैनी पैदा

करे, सुलाए नहीं।'' मैं समझता हूँ किसी भी साहित्य या काव्य के लिए प्रेमचन्द की ये पंक्तियाँ प्रेरणा का पाथेय हैं।

मित्रों, आज आपने श्री रामेश्वर प्रकाश अवस्थी सम्मान' से सम्मानित किया है। आज के दिन कविवर अनुरोध जी से मेरा अनुरोध होगा कि अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय जीवन में ऐसी नव–चेतना जागृत करें, ताकि चतुर्दिक राष्ट्रीयता की भावना मुखरित हो उठे, सामाजिक समरसता का प्रकाश व्याप्त हो जाय। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर जी ने कभी कहा था कि–

''रोटी दो, मत उसे गीत दो
जिसको भूख लगी है।
भूखों में दर्शन उभारना,
छल है, दगा, ठगी है।।''

–दिनकर जी ने जब ये पंक्तियाँ लिखी थीं, तब उनके सामने भी हमारे देश और समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता की तस्वीर रही होगी। समाज में सबको जीने के समान सुअवसर हों, समान सुविधाएँ प्राप्त हों, सामाजिक न्याय और बराबरी हर जगह अगर व्याप्त हो, तभी गीतों और दर्शन का महत्व है। कवि या साहित्यकार समाज के संवेदनशील प्राणी होते हैं। सामाजिक समरसता के स्वर जब उनकी कविताओं के माध्यम से मुखरित होंगे, तब उसकी स्वीकार्यता बढ़ जाएगी। आज 'भौतिकवाद' एवं 'बाजारवाद' के प्रकोप के कारण हम अपने सांस्कृतिक वैभव को विस्मृत करने लगे हैं। यह उचित नहीं है। साहित्यकारों का दायित्व आज के माहौल में ज्यादा गुरूत्तर और गंभीर है। प्रेमचन्द जी ने ठीक ही कहा है कि साहित्यकार मशाल लेकर आगे–आगे चलते हैं, समाज और राजनीति तो उनका अनुसरण करती है। मुझे विश्वास है कि कवि अनुरोध जी सहित पश्चिम बंगाल राज्य के सभी

हिन्दी एवं बांग्ला भाषा के साहित्यकार देश और समाज को विकास के मार्ग पर सतत् अग्रसर होने में एक सच्चे पथ–प्रदर्शक की भूमिका निभायेंगे।

नया वर्ष हम सबके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। ऐसे माहौल में भव्य सांस्कृतिक–साहित्यक आयोजन के लिए मैं आप सबको साधुवाद देता हूँ। आप सबको नये वर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए कहना चाहता हूँ कि–

''नये वर्ष में हर्ष नया हो
जीवन का उत्कर्ष नया हो।''

–आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।